

শ্রীঃ  
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ  
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।  
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রী মেল্পপত্তূর্ নারায়ণভট্টতিরি ঝিরচিতম্  
॥শ্রীমন্নারায়ণীয়ম্ ॥

দশক - ৩৭

*This document\* has been prepared by*  
**Sunder Kidambi**  
*with the blessings of*  
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্  
**His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam**

---

\*This was typeset using Bengali for T<sub>E</sub>X.

শ্রীঃ  
শ্রীমতে কৃষ্ণায় পরব্রহ্মণে নমঃ  
শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

॥শ্রীমন্নारायणीयम् ॥

दशक - ७७

कृष्णरतारप्रसङ्गवर्णनम्

सान्प्रानन्दतनो हरे ननु पुरा दैवासुरे सङ्गरे  
त्वत्कृत्वा अपि कर्मशेष बशतो ये ते न याता गतिम्।  
तेषां भूतलजन्मनां दितिभूरां भारेण दूरार्दिता  
भूमिः प्राप विरिण्माश्रितपदं देवैः पुरैरागतैः ॥ १ ॥

हा हा दुर्जनभूरिभारमथितां पाथोनिधौ पातुकां  
एतां पालय हन्त मे विरशतां सम्पृच्छ देवानिमान्।  
इत्यादि प्रचूरप्रलापरिबशामालोक्य धाता महीं  
देवानां वदनानि वीक्ष्य परितो दधौ भवन्तुं हरे ॥ २ ॥

उचे चाम्बुजभूरमूनिषि सुराः सत्यं धरित्र्या वचो  
नवस्या भवतां च रक्ष्णविधौ दम्फ्हा हि लम्ब्वीपतिः।  
सर्वे शर्वपुरससरा वयमितो गत्वा पयोवारिधिं  
नत्वा तं स्तमहे जरादिति ययुः साकं तराकेतनम् ॥ ३ ॥

ते मुक्कानिलशालि दुग्गजलधेस्तीरं गताः सङ्गता  
यारव्वतपदचिन्तनैकमनसस्तारत् स पाथोजभूः।  
त्वद्वाचं हृदये निशम्य सकलानानन्दयन्नूचिरा-  
नाथ्यातः परमात्मना स्वयमहं वाक्यं तदाकर्ण्यताम् ॥ ४ ॥

जाने दीनदशामहं दिरिषदां भूमेश्च भीमैर्नूँपै-  
स्ततस्फेपाय भवामि यादवकुले सोहं समग्रात्मना।  
देवा वृष्णकुले भवन्तु कलया देवासनाचारनौ  
मतसेवाथमिति त्वदीयवचनं पाथोजभूरुचिरान् ॥ ५ ॥

শ্রুত্বা কর্ণরসায়নং তব রচঃ সর্বেষু নির্বাপিত-  
 স্বান্তেষরীশ গতেষু তারককৃপাপীযুষতৃপ্তাসু।  
 বিখ্যাতে মধুরাপুরে কিল ভবত- সান্নিধ্যপুণ্যোত্তরে  
 ধন্যাং দেবকনন্दिनीমুদরহদ্রাজা স শূরাশ্রজঃ ॥ ৬ ॥

উদ্বাহরসিতৌ তদীয়সহজঃ কংসোথ সম্মানয-  
 ন্নেতৌ সূততয়া গতঃ পথি রথে র্যোমোথয়া স্বদিরা।  
 অস্যাশ্রামতিদুষ্টমষ্টমসুতো হন্তেতি হন্তেরিতঃ  
 সল্লাসাত্ স তু হস্তমস্তিকগতাং তন্মীং কৃপাণীমধাত্ ॥ ৭ ॥

গৃহ্নানশ্চিকুরেযু তাং খলমতিঃ শৌরেশ্চিরং সান্ত্বনৈঃ  
 নো মুখণ্ পুনরাশ্রজাপর্ণগিরা প্রীতোথ যাতো গৃহান্।  
 আদ্যাং স্বতসহজং তথাপিঁতমপি স্নেহেন নাহ্নসৌ  
 দুষ্টানামপি দেব পুষ্টকরণা দৃষ্টা হি ধীরেকদা ॥ ৮ ॥

তারত্বন্মনসৈব নারদমুনিঃ প্রোচে স ভোজেশ্বরং  
 যুযং নন্বসুরাঃ সুরাশ্চ যদরো জানাসি কিং ন প্রভো।  
 মাযারী স হরিভর্ষধধকৃতে ভারী সুরপ্রার্থনা-  
 দিত্যাকর্গ্য যদূনদূধুনদসৌ শৌরেশ্চ সূনূনহন্ ॥ ৯ ॥

প্রাপ্তে সপ্তমগর্ভতামহিপতৌ স্বতপ্রেরণান্মাযযা  
 নীতে মাধব রোহিণীং ত্বমপি ভোসসচ্চিতসুখৈকাত্মকঃ।  
 দেবক্যা জঠরং বিরেশিথ বিভো সংসুযমানসসুরৈঃ  
 স ত্বং কৃষ্ণ বিধূয রোগপটলীং ভক্তিং পরাং দেহি মে ॥ ১০ ॥

\*\*\*\*\*